संज्ञा

ऋकारांत पुँल्लिङ्ग

संज्ञा

संसारे व्यक्ते: जातीनां, वस्तूनां, स्थानानां, भावानां च नामानि संज्ञा भवन्ति।

अर्थात, किसी व्यक्ति, वस्तु स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।

यथा -	महात्मा गाँधी	मेघा:
	छात्र:	सौन्दर्यम्

संज्ञा के भेद

संज्ञा के तीन भेद किए गए हैं:

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा

2. जातिवाचक संज्ञा

3. भाववाचक संज्ञा

अब हम आपको ऋकारांत (पितृ, कर्तृ) पुँल्लिङ्गम् तथा इकारांत (मति, गति) स्त्रीलिङ्गम् के रुप-परिचय तथा प्रयोग के बारे में जानकारी देंगे।

सर्वप्रथम हम ऋकारांत शब्दों के बारे में जानेंगे। जैसा कि शब्द से ही पता चल रहा है –

ऋ अकारांत अर्थात जिसके अन्त में '**ऋ**' हो वे शब्द ऋकारांत कहलाते हैं।

जैसे – पितृ, कर्तृ आदि।

पितृ का पदविच्छेद – प् + इ, त् + ऋ

अब हम इनके शब्द रुप देखेंगे।

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	पिता	पितरौ	पितर:
द्वितीया	पितरम्	पितरौ	पितृन्
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभि:
चतुर्थी	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्य:
पञ्चमी	पितु:	पितृभ्याम्	पितृभ्य:
षष्ठी	पितु:	पित्रो:	पितृणाम्
सप्तमी	पितरि	पित्रो:	पितृषु
सम्बोधन	हे पित:	हे पितरौ	हे पितर:

पितृ के समान कर्तृ दातृ, भ्रातृ, धातृ, नेतृ एवं विधतृ के रुप भी बनेंगे।

आइए अब इनके कुछ उदाहरणों को देखें।

एष: मम पिता अस्ति।

यह मेरे पिता हैं।

यहाँ **प्रथमा विभक्ति** एकवचन का प्रयोग किया गया है।

अहं पित्रा सह उद्यानं गच्छामि।

मैं पिता के साथ उद्यान जाता हूँ।

यहाँ **तृतीया विभक्ति** एकवचन का प्रयोग किया गया है।

संसारस्य कर्त्रे नमः।

संसार के कर्ता (भगवान) को प्रणाम है।

यहाँ **चतुर्थी विभक्ति** का प्रयोग किया गया है।

सः पितुः विभेति।

वह पिता से डरता है।

यहां **पञ्चमी विभक्ति** का प्रयोग किया गया है।

त्वं पितुः नाम किं असि?

तुम्हारे पिता का नाम क्या है।

यहाँ **षष्ठी विभक्ति**, एकवचन का प्रयोग किया गया है।

अब हम इकारांत शब्दों के बारे में चर्चा करेंगे।

वे शब्द जिनके अंत में '**इ**' लगा होता है, इकारांत शब्द कहलाते हैं।

जैसे: मति, गति आदि।

आइए अब इनके शब्द रुप देखें।

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा:	मतिः	मती	मतयः

द्वितीया	मतिम्	मती	मती:
तृतीया	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभि:
चतुर्थी	मत्यै, मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्य:
पञ्चमी	मत्या:, मते:	मतिभ्याम्:	मतिभ्य:
षष्ठी	मत्या: मते:	मत्यो:	मतीनाम्
सप्तमी	मत्याम्, मतौ	मत्यो:	मतिषु
सम्बोधन	हे मते	हे मती	हे मतय:

इसी प्रकार गति, नीति, शान्ति, प्रीति, सूक्ति संस्कृति, भूमि एवं कीर्ति (स्त्रीलिंग) के रुप बनेगें।

आईए कुछ उदाहरणों को देखें।

अहं तीव्र गत्या विद्यालयं गच्छामि।

मैं तेज़ी से विद्यालय जाता हूँ।

स: मम मत्या सर्वे कार्याणि करोति।

वह मेरी बुद्धि से ही सभी कार्यों को करता है।

इन दोनों वाक्यों में **तृतीया विभक्ति, एकवचन** का प्रयोग किया गया है।

इकारांत स्त्रीलिङ्ग

ईकारांत स्त्रीलिङ्ग (नदी, भगिनी) तथा उकारान्त नपुसंकलिगं (वारि, मधु)।

ईकारान्त शब्द

वे शब्द जिनके अंत में '**ई**' लगा होता है, ईकारान्त शब्द कहेलाते हैं।

जैसे: नदी, भगिनी आदि।

आओ अब इनके शब्द रुप को देखें।

नदी

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा:	नदी	नद्यौ	नद्य:
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदी:
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभि:
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्य:
पञ्चमी	नद्या:	नदीभ्याम्	नदीभ्य:
षष्ठी	नद्या:	नद्यो:	नदीनाम्

सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	हे नदि	हे नद्यौ	हे नद्यः

इसके अनुरुप भगिनी, नारी एवं देवी के भी रुप बनेंगे।

अब इलके कुछ उदाहरण देखेते हैं।

एषा मम् <u>भगिनी</u> अस्ति।

यह मेरी बहन है।

रामस्य षट् <u>भग्नयः</u> सन्ति।

राम की छः बहनें हैं।

<u>नदीम्</u> उभयतः वृक्षाः सन्ति।

नदी के दोनों ओर पेड़ हैं।

कृषकाः <u>नद्या</u> स्व कृषिकार्य कुर्वन्ति।

किसान नदी से अपना कृषि कार्य करते हैं।

आइए अब 'वारि' (जल) इकारान्त नपुंसकलिंग के शब्द रुपों से परिचय करें।

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमाः	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वितीया	वारि	वारिणी	वारीणि

तृतीया	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
चतुर्थी	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
पञ्चमी	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
षष्ठी	वारिणः	वारिणोः	वारिणाम्
सप्तमी	वारिणि	वारिणोः	वारिषु
सम्बोधन	हे वारि	हे वारिणी	हे वारिणि

अब हम इनकी सहायता से कुछ वाक्य बनाने का प्रयास करेंगे।

वर्षात सर्वे मार्गें <u>वारीणि</u> भवन्ति।

वर्षा के कारण सभी रास्तों में पानी हो गया।

समुद्रस्य हेतो <u>वारि</u> अस्ति।

समुद्र का कारण जल है।

<u>वारिणः</u> प्रभु इन्द्राय नमः।

जल के प्रभु इन्द्रदेव को नमस्कार है।

मीनाः मात्र <u>वारिणि</u> एव निवसन्ति।

मछलियाँ केवल जल में ही रहती हैं।

उकारान्त शब्द

वे शब्द जिनके अंत में '**उ**' लगा होता है, उकारान्त शब्द कहलाते हैं।

जैसे: मधु (नपुंसकलिंग)

आइए अब इसके शब्द रुपों से परिचय करें।

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा:	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	मधु	मधुनी	मधूनि
तृतीया	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभि:
चतुर्थी	मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्य:
पञ्चमी	मधुन:	मधुभ्याम्	मधुभ्य:
षष्ठी	मधुन:	मधुनो:	मधूनाम्
सप्तमी	मधुनि	मधुनो:	मधुषु
सम्बोधन	हे मधु	हे मधुनी	हे मधूनि

अब हम इनकी सहायता से कुछ वाक्य बनाएंगे।

पिपीलिका: मधु खादन्ति।

चीटियाँ शहद खाती हैं।

अनेकानि औषध्या: मधुभि सह सेव्यन्ते।

अनेकों औषधियों का सेवन शहद के साथ किया जाता है।

तत्र बालका: मधुने वृक्षे प्रस्तर: प्रक्षिपन्ते।

वहाँ बच्चे शहद के लिए पेड़ पर पत्थर फेंकते हैं।

मधु भल्लूक: सर्वप्रिय: खाद्यवस्तु अस्ति।

शहद भालू की सबसे प्रिय खाद्यवस्तु है।

एतानि कानि वस्तूनि सन्ति?

ये किसकी वस्तुएँ हैं?